फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 77 संख्याः 100 प्रभात जयपुर, बुधवार 11 नवम्बर, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com



From A Nightclub To The Palace Of Kapurthala

It was in May, 1906, when Anita and her sister performed a curtain raiser act at the Kursaal Fronton, a modern nightclub in Madrid that things took a turn

The Emerald of Jahangir

In the Mughal worldview, gemstones carried deeper meanings.

'मैंने राजीव से बहुत मिन्नतें की थीं, राजनीति में न जाएं'

'लेकिन, जब राहुल के राजनीति में आने की बात हुई तो मैंने उन्हें नही रोका'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। सोनिया गांधी ने अपने पति राजीव गांधी से राजनीति में न आने की ''मिन्नत'' की थी, लेकिन जब उनके बेटे राहुल गांधी के लिए पॉलिटिक्स में अपना जीवन लगाने का समय आया, तो उन्होंने ''इसका विरोध नहीं किया।'' कांग्रेस की वरिष्ठ नेता ने अपनी आत्मकथा ''बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव'' में यह खुलासा किया है। उनकी यह आत्मकथा 10 नवंबर को दुनिया भर में प्रकाशित हो रही है।

- सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा ''बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव'' में यह दावा किया और कहा, राहुल की बहुत पहले से राजनीति में रूचि थी।
- सोनिया ने बताया कि जब राहुल स्कूल में पढ़ते थे, तब भी राजीव अक्सर राहुल को अमेठी ले जाते थे ताकि वे ग्रामीण जीवन की कठिनाईयों को देख सकें।
- सोनिया ने बताया कि उनके चुनाव प्रचार के दौरान प्रियंका चुनाव क्षेत्र में ही रहती थीं। इससे वे पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता की प्रिय बन गईं।

हार्पर कॉलिन्स इंडिया और पैन्गिवन रैंडम हाउस द्वारा प्रकाशित अपनी इस आत्मकथा को उन्होंने अपने दोनों बच्चों राहुल और प्रियंका को समर्पित किया है।

सोनिया गांधी लिखती हैं कि ''राहुल की राजनीति में लंबे समय से रुचि थी।'' राहुल और प्रियंका का उत्तर प्रदेश के अमेठी से भी गहरा जुड़ाव था। अमेठी उनके माता-पिता का चुनाव क्षेत्र था और उत्तर प्रदेश हिंदी भाषी क्षेत्र का एक प्रमुख राज्य है।

सोनिया गांधी लिखती हैं कि राजीव गांधी राहुल को कई बार स्कूल के दिनों में अमेठी ले गए थे। बाद में भी वे उन्हें वहां ले जाते रहे, ताकि राहुल ग्रामीण जीवन की कठिन वास्तविकताओं को समझ सकें।

सोनिया गांधी के अनुसार, प्रियंका अपने माता-पिता के सभी चुनावों के दौरान अमेठी में मौजूद रहती थीं। इस दौरान उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई।

सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''लेकिन उनकी (प्रियंका) पहली प्राथमिकता अपने छोटे बच्चों की परवरिश करना और बौद्ध अध्ययन (बुद्धिस्ट स्टडीज़) में पोस्ट ग्रैजुएट डिप्लोमा करना था। जब भी राहुल भारत वापस आते, तो वे मेरे साथ या अपनी बहन के साथ अमेठी जाते थे। इस तरह वे दोनों ही वहां के लोगों के लिए जाने-पहचाने चेहरे बन गए थे। इन्हीं दौरों के दौरान जब वे आखिरकार भारत लौटे, तो राहुल ने खुद को वहाँ के लोगों के प्रतिनिधि के तौर पर काम करने के लिए तैयार पाया।''

सोनिया गांधी लिखती हैं कि कैम्ब्रिज में राहुल ने एमफिल की पढ़ाई के दौरान ''डवलपमैंट स्टडीज़'' विषय चुना था। विदेश में नौकरी करने के दौरान भी वे भारत की राजनीतिक घटनाओं को करीब से फॉलो करते थे।

गांधी लिखती हैं, ''पार्टी लगातार उन पर सक्रिय भूमिका निभाने के लिए दबाव डाल रही थी। इसका मतलब था कि उन्हें अपनी जिंदगी पूरी तरह बदलनी पड़ती। वे एक सार्वजनिक व्यक्ति बन जाते, जिनकी हर कदम पर निगरानी होती और जिनके हर काम का आकलन किया जाता।'' वे आगे लिखती हैं कि ''प्रियंका और मेरे साथ बातचीत करने तथा खुद काफी सोच-विचार करने के बाद'' राहुल ने यह फैसला लिया।

मार्च 2004 में राहुल ने कहा कि वह अमेठी से चुनाव लड़ेंगे, जबकि सोनिया गांधी ने पास के रायबरेली चुनाव क्षेत्र चली जाएंगी।

सोनिया लिखती हैं, ''दो दशक पहले मैंने राजीव से राजनीति में न आने की मिन्नत की थी। मैंने उनसे कहा था कि वे खुद को और हम सभी को उस खतरों से भरी दुनिया में न झोंकें। लेकिन अब बारी मेरे बेटे की थी और इस बार मैंने उसे नहीं रोका। राहुल ने अपने पिता के अंत का अंदाज़ा लगा लिया था। इस बात को लेकर उन्होंने अपने पिता के साथ लड़ाई भी की थी। इसके बावजूद उनके मन में अपने पिता के मूल्यों के प्रति गहरा जुड़ाव और उस साहस के लिए सम्मान था, जिसके साथ राजीव मंडराते खतरे के बावजूद डटे रहे।''

वे लिखती हैं कि राहुल ने अपना पहला चुनाव बड़े अंतर से जीता और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एलएलबी के लिए आयु सीमा समाप्त

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) ने हाल ही में सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उसने तीन साल और पांच साल के लॉ डिग्री प्रोग्राम में प्रवेश के लिए अधिकतम आयु सीमा हटा दी है।

इस जानकारी को ध्यान में रखते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत,

- बार काउन्सिल ऑफ इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया है कि तीन साल और 5 साल के कानून डिग्री कोर्स में प्रवेश के लिए ऊपरी आयु सीमा हटा दी गई है।

न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने आयु सीमा के खिलाफ दायर याचिका का निपटारा कर दिया।

वर्ष 2017 में अदालत ने बीसीआई के वर्ष 2016 के उस फैसले पर रोक लगा दी थी, जिसमें पांच वर्षीय एलएलबी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए अधिकतम आयु सीमा 22 वर्ष और तीन वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए 45 वर्ष तय की गई थी।

दो महीने पहले सुप्रीम कोर्ट ने बीसीआई से पूछा था कि क्या वह कानून की डिग्री के पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए अधिकतम आयु सीमा तय करने वाले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पहला बच्चा खोने के दुःख से आज भी उबर नहीं पाई हैं सोनिया

सोनिया ने बताया कि जनवरी 1969 में उन्होंने अपना पहला बच्चा खो दिया था, वह ''प्रीमैच्योर'' शिशु था

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। दस नवंबर को प्रकाशित हुई अपनी आत्मकथा में कांग्रेस की अपने संस्मरणात्मक कृति में कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी ने जनवरी 1969 में अपने पहले बच्चे को खोने की घटना को याद किया है, जो कि एक प्रीमैच्योर (समय-पूर्व जन्मा) बच्चा था। उन्होंने अपने दुख, नवजात शिशु के अवशेषों को नदी में बहाने से इनकार करने और इस बात का जिक्र किया है कि कैसे राजीव और संजय गांधी ने परिवार के महरौली स्थित फार्म हाउस में उसे दफनाया था।

- सोनिया ने बताया कि सितंबर 1968 में उन्हें पता चला कि वे माँ बनने वाली हैं, इस बात से इंदिरा जी व राजीव बेहद खुश हुए थे।
- सोनिया ने बताया कि उन्होंने अपने मृत बच्चे को नदी में बहाए जाने से मना कर दिया था, फिर राजीव और संजय ने उसे महरौली के फॉर्म हाउस में दफनाया था, उस पर भी विवाद खड़ा किया गया था।

सोनिया ने लिखा है कि सितम्बर 1968 में जब उन्हें व राजीव गांधी को माता-पिता बनने की बात पता चली तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। पहले बच्चे के आने की खुशी, उसके स्वागत की तैयारियां और माता-पिता बनने का उत्साह जनवरी 1969 में गहरे दुख में बदल गया। इसके बाद जो हुआ, वह एक बेहद निजी त्रासदी थी। इस दुख के साथ बच्चे के अंतिम संस्कार को लेकर सवाल भी जुड़े थे। इसके अलावा, एक अखबार में छपी एक बेहद दुखद खबर ने इस दर्द को और भी बढ़ा दिया। सोनिया गांधी के अनुसार, वह खबर आज भी उन्हें परेशान करती है।

उन्होंने अपने संस्मरण में बच्चे को दफनाने की परिस्थितियों, परिवार से मिले सहयोग और इस त्रासदी से मिले भावनात्मक आघात के बारे में भी लिखा है।

सोनिया लिखती हैं कि सितंबर में जब उन्हें और राजीव को पता चला कि वे मां बनने वाली हैं, तो दोनों बहुत खुश हुए थे। उनकी सास इंदिरा गांधी भी यह खबर सुनकर बेहद प्रसन्न हुई थीं। विदेश में तैनात एक मित्र को लिखे पत्र में इंदिरा ने कहा था, ''क्या मैं आपको एक राज की बात बताऊं? अप्रैल में मैं दादी बनने वाली हूं। हम सभी इस खबर से बेहद खुश हैं।''

इंदिरा गांधी ने यह खबर सुनकर सोनिया को चूमा और गले लगाया। उन्होंने मजाक में कहा, ''एक बड़ी बच्ची एक शिशु को जन्म देने वाली है!'' सोनिया लिखती हैं कि उन्हें इंदिरा का प्यार और स्नेह अच्छा लगा, लेकिन उन्होंने राजीव से इस टिप्पणी के बारे में पूछा। वह सोच रही थीं कि क्या अपनी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'प्र.मंत्री मोदी नज़र मिलाने से कतराते हैं'

सोनिया गांधी ने अपनी किताब में यह दावा किया और बताया कि आमने-सामने पड़ने पर हम नमस्ते करते हैं, पर, प्र.मंत्री उस समय कहीं और देखते रहते हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा ''बिलॉन्गिग: अ जर्नी ऑफ लव'' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बारे में लिखा है, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से आधिकारिक कार्यक्रमों में मुलाकात तो होती है, लेकिन उनके साथ ''कभी कोई आत्मीय बातचीत नहीं हुई।'' उनकी यह किताब 10 नवंबर को बाजार में आ रही है।

- सोनिया ने संसद सत्र खत्म होने के बाद स्पीकर के चैम्बर में होने वाली मीटिंग का उदाहरण देते हुए कहा, उस छोटे से चैम्बर में सभी दलों के नेता एकत्रित होते हैं। प्रधानमंत्री से आमना-सामना होने पर नमस्ते होती है, पर, वे आँख नहीं मिलाते हैं।
- सोनिया ने कहा, पहले ऐसा नहीं होता था। अलग-अलग दलों के नेता एक दूसरे के साथ सम्मानजनक तरीके से पेश आते थे।

सोनिया गांधी अपनी पुस्तक में लिखती हैं, ''नरेन्द्र दामोदरदास मोदी इस किताब के लिखे जाने तक 12 साल से अधिक समय से भारत के प्रधानमंत्री हैं और अब अपने तीसरे कार्यकाल में हैं। आज तक उनसे मेरा व्यावहारिक रूप से कोई वास्तविक संपर्क नहीं रहा है।''

कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष का कहना है कि जब भी दोनों की मुलाकात होती है, तो वे एक-दूसरे को नमस्ते करते हैं। लेकिन उनका दावा है कि प्रधानमंत्री ''अक्सर इधर-उधर देखने लगते हैं, और आंखें मिलाने से बचते हैं।'' सोनिया के मुताबिक, यह अतीत में अलग-अलग राजनीतिक दलों के नेताओं के बीच दिखने वाली आपसी सौहार्द की परंपरा से दूर जाने जैसा है।

सोनिया लिखती हैं, ''हम अर्ध-सरकारी आयोजनों में मिलते हैं। उदाहरण के लिए, जब संसद के प्रत्येक सत्र के समापन पर प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता आम तौर पर लोकसभा अध्यक्ष के कक्ष में इकट्ठा होते हैं। वह एक बहुत छोटा कमरा है और वहां आम तौर पर कई लोग होते हैं। लेकिन जब उनका आमना-सामना मुझसे होता है, तो हम औपचारिक रूप से एक-दूसरे का नमस्ते से अभिवादन करते हैं। पर वे अक्सर नजरें घुमा लेते है आंख मिलाने से कतराते हैं। अतीत में ऐसा नहीं था। तब अलग-अलग राजनीतिक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

यमुना में शुरु हुआ दिल्ली का पहला रिवर क्रूज़

नई दिल्ली, 10 नवंबर। दिल्ली में यमुना नदी पर पहली मनोरंजक क्रूज सेवा शुरू हो गई है। केंद्रीय बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने मंगलवार को दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की मौजूदगी में सोनिया विहार-जगतपुर

- यह इलैक्ट्रिक क्रूज़ छः कि.मी. क्षेत्र में नदी की सैर कराएगा।

खंड पर इस सेवा का उद्घाटन किया। 30 यात्रियों की क्षमता वाला इलेक्ट्रिक क्रूज करीब छह किलोमीटर के क्षेत्र में नदी की सैर कराएगा। इस पहल का उद्देश्य दिल्ली में नदी पर्यटन को बढ़ावा देना और यमुना को पर्यटन एवं मनोरंजन के नए केन्द्र के रूप में विकसित करना है।

कार्यक्रम में केन्द्रीय बंदरगाह, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री शांतनु ठाकुर, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा, दिल्ली सरकार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल के दीपावली स्नेह मिलन में बड़ी संख्या में आम जन पहुँचे

उन्होंने डीग में श्रीनाथ जी के मंदिर में दर्शन किए व अन्नकूट प्रसादी ली

जयपुर, 10 नवम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा मंगलवार को मुख्यमंत्री आवास पर आयोजित दीपावली स्नेह मिलन समारोह में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में आमजन पहुंचे। मुख्यमंत्री से मुलाकात को लेकर लोगों में खासा उत्साह देखने को मिला।

मुख्यमंत्री ने सभी को दीपोत्सव की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने उपस्थित लोगों से सहज संवाद कर दीपावली की खुशियां साझा कीं तथा उनके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

समारोह में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारियों, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों सहित बड़ी, संख्या में आमजन की सहभागिता रही।

इसके बाद, मुख्यमंत्री ने डीग जिले के पूंछरी का लौठा में मुकुट मुखारविंद मंदिर में दर्शन किए और मंत्रोच्चार के बीच सपत्नीक विधिवत पूजा-अर्चना और अभिषेक कर प्रदेश एवं प्रदेशवासियों को गोवर्धन पर्व की शुभकामनाएं दीं।



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा आयोजित दीपावली स्नेह मिलन समारोह में बड़ी संख्या में आमजन पहुंचे।

- जयपुर में मुख्यमंत्री आवास पर हुए समारोह में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक, धार्मिक एवं व्यापारिक संगठनों के साथ समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

इसके पश्चात, मुख्यमंत्री पैदल ही श्रीनाथजी मंदिर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने श्रद्धालुओं से दिवाली की रामा-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री आज जैसलमेर में

जयपुर, 10 नवंबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को जैसलमेर दौरे पर रहेंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री

- तनोट माता के दर्शन करने के बाद वे बीएसएफ जवानों के भाईदूज कार्यक्रम में भाग लेंगे।

प्रसिद्ध तनोट माता मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना कर देश और प्रदेश की खुशहाली की कामना करेंगे।

मुख्यमंत्री सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के जवानों के भाईदूज कार्यक्रम में भी शिरकत करेंगे।

अपनी देवरानी मेनका के साथ मतभेदों पर खुलकर लिखा है, सोनिया गांधी ने

सोनिया ने बताया कि विवाद की शुरुआत संबोधन से हुई, जहाँ सारा स्टाफ उन्हें ''बहूरानी'' कहता था और मेनका को ''छोटी बहू'', यह बात मेनका को अपमानजनक लगती थी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। मेनका आनंद जब गांधी परिवार का हिस्सा बनीं, तब उनकी उम्र महज 18 साल थी। घर में उन्हें 'छोटी बहू' कहा जाता था। सोनिया गांधी के लिए घर में एक देवरानी का होना शुरू में सुखद अनुभव था। लेकिन धीरे-धीरे दोनों के रिश्तों में कड़वाहट आ गई और संजय गांधी की विधवा मेनका घर छोड़कर चली गईं। मंगलवार को जारी अपने संस्मरण 'बिलॉन्गिंग: ए जर्नी ऑफ लव' में सोनिया गांधी ने मेनका के गांधी परिवार में आने और फिर उनके साथ रिश्ते खराब होने की पूरी कहानी बयान की है।

- सोनिया बताती हैं कि 1973 के अंत में जब संजय गांधी की मेनका से मुलाकात हुई थी, तब मेनका बेहद खूबसूरत, चंचल किशोरी थीं और 18 साल की उम्र में वे संजय की दुल्हन बन कर घर आ गई थीं।
- ''मेनका बहुत बातूनी, जिंदादिल और खुलकर जीने वाली लड़की थीं। मैं अक्सर उनकी बातें सुनकर अभिभूत होती थी और प्रियंका तो अक्सर अपनी चाची के ही कमरे में रहती थी, उनसे कहानी सुनती थी।''
- सोनिया ने बताया, शुरु में सब अच्छा था, पर, धीरे-धीरे बात बिगड़ती गई। मेनका अक्सर कटाक्ष करती थीं, मैं प्रायः चुप रह जाती थी। पर, बात जब हद से बढ़ गई, तो मैं सख्ती से जवाब देने लगी।

सोनिया ने लिखा है कि 1973 के अंत में संजय गांधी की मुलाकात मेनका से कराई गई थी, जो खूबसूरत चंचल थीं और संजय से दस साल छोटी थीं और उस समय तक मेनका नाबालिग थी।

एक साल के भीतर दोनों की शादी हो गई और 18 साल की मेनका गांधी परिवार का हिस्सा बन गईं। सोनिया गांधी अपने संस्मरण में यह बात याद करती हैं।

वे लिखती हैं, ''मेनका बहुत ज़िंदादिल और बातूनी लड़की थीं। उनमें भरपूर जोश था। शुरुआत में घर में एक देवरानी का होना अच्छा लगा। कई बार मुझे एमि आंटी (इंदिरा गांधी के स्टाफ की वरिष्ठ सदस्य) के कमरे से उनकी हंसी सुनाई देती थी। मैं यह जानने के लिए वहां चली जाती कि आखिर किस बात पर इतना हंसी-मजाक हो रहा है। फिर वहीं बैठकर उनकी दोस्तों या किसी किताब के बारे में जीवंत गपशप सुनने लगती।''

सोनिया आगे लिखती हैं कि उनकी बेटी प्रियंका अक्सर अपनी चाची मेनका के कमरे में बैठी मिलती थीं और बड़े ध्यान से उनकी सुनाई कहानी सुनती थी।

सोनिया गांधी लिखती हैं, ''लेकिन धीरे-धीरे घर का माहौल बदलने लगा और छोटी-छोटी बातों पर तनाव पैदा होने लगा।''

इसकी शुरुआत घर की दोनों बहुओं को संबोधित करने के तरीके से हुई। सोनिया बड़ी बहू थीं और घर के कर्मचारी उन्हें 'बहुरानी' कहते थे। संजय छोटे भाई थे, इसलिए उनकी पत्नी मेनका को 'छोटी बहू' कहा जाता था।

सोनिया गांधी के मुताबिक, दोनों को घर में समान रुप से बेटी की तरह माना जाता था। सोनिया का मानना है कि मेनका ने शायद 'छोटी बहू' कहे जाने को अपना अपमान माना।

सोनिया लिखती हैं, ''जब वे मेरे साथ रूखे ढंग से बात करतीं तो घर में शांति बनाए रखने के लिए मैं आम तौर पर चुप रहती थी। लेकिन जब मुझे लगता कि बात हद से आगे बढ़ गई है, तो मैं भी संक्षिप्त और सख्त जवाब देने से पीछे नहीं हटती थी।''

संजय और मेनका के बीच के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'क्या महत्वांकाक्षी होना अपराध है?

नई दिल्ली, 10 नवंबर। सोनिया गांधी की नई किताब बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव में पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा का जिक्र किए जाने पर उनकी बेटी शर्मिष्ठा मुखर्जी ने पलटवार किया है। शर्मिष्ठा ने सोशल मीडिया

- सोनिया गांधी की आत्मकथा में प्रणब मुखर्जी के प्रधानमंत्री बनने की इच्छा के प्रसंग पर मुखर्जी की बेटी शर्मिष्ठा ने पलटवार किया।

प्लेटफॉर्म ''एक्स'' पर एक पोस्ट में सवाल उठाया कि उनके पिता की प्रधानमंत्री बनने की इच्छा पर सोनिया गांधी को हैरानी क्यों हुई? उन्होंने कहा कि उनके पिता ने दशकों की मेहनत, राजनीतिक अनुभव और काबिलियत के दम पर अपना मुकाम हासिल किया था, न कि किसी पारिवारिक विरासत के आधार पर।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)